वन, टू, ट्री...

चकमक समाचार के ज़रिए हम तुम तक अखबारों में छपी कुछ मज़ेदार खबरें लाएँगे। इस बार खबरों में हैं नलिनी नाडकर्णी का शौक और बराक ओबामा का नाम...

नलिनी नाडकर्णी का शौक है पेड़ों के सबसे ऊपर, यानी उनकी छत तक चढ़ना। न केवल खुद जाना बल्कि दूसरों को भी लेकर जाना। उनसे ही हमें पेड़ों की छत पर ही सारी उम्र गुज़ार देने वाले पौधों और जीवों के बारे में बहुत-सी बातें पता चलीं। यह भी पता चला कि ये ज़मीन पर रहने वाले दूसरे जीवों से कैसे दोस्ती निभाते हैं। नलिनी ने 20 से भी ज़्यादा साल कोस्टारिका, पापुआ, अमेज़न, उत्तर-पश्चिम प्रशान्त क्षेत्र आदि के वर्षावनों में बिताए हैं। वर्षावनों के ऊँचे पेड़ों की छतरी पर किए उनके अध्ययन पर्यावरण के कई महत्वपूर्ण मुद्दों से सीधे जुड़े हैं। जैसे- जैवविविधता, दुनिया की जलवायु आदि।

आपको इसमें मज़ा कब से आने लगा ?

छुटपन से ही मैं पेड़ों पर चढ़ती आई हूँ। मेरे पिता एक वैज्ञानिक थे। मेरी माँ व पिताजी दोनों को बागवानी करना और कुदरत के साथ रहना अच्छा लगता था। जब कॉलेज में पहुँची तो मैंने तय कर लिया कि मैं पेड़ों का अध्ययन करूँगी। और इसी को अपना पेशा बनाऊँगी।

लेकिन पेड़ों का सबसे ऊपरी सिरा ही क्यों चुना

जंगल को और ज़्यादा जानने के लिए मैं कोस्टारिका के कुछ वर्षावनों में गई। मैंने पाया कि कई वनस्पतियाँ और प्राणी पेड़ों के ऊपरी सिरों में ही रहते हैं जिनके बारे में वैज्ञानिकों को लगभग कुछ पता नहीं होता है। इसका सबसे बड़ा कारण तो उनका पेड़ों पर न चढ़ पाना है। मैंने रस्सी और साज के सहारे पहाड़ों पर चढ़ना सीखा ही था। तो मैंने सोचा क्यों न पेड़ों पर भी चढ़ा जाए। मैंने देखा कि वहाँ ऐसी कितनी ही चीज़ें थीं जिनके बारे में हमें कुछ भी पता ही नहीं है।

हमने सुना है कि आपने कैनोपी (पेड़ की छतरी)-

हाँ। मुझे हमेशा से लगता था कि शिकार करते वक्त या मिलेट्री के लोगों द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों में जिस तरह के रंग और डिज़ाइन होते हैं वे वनस्पति विज्ञान की दृष्टि से सही नहीं हैं। तो मैंने वर्षावनों में सचमुच में पाए जाने वाले पौधों के चित्र कपड़ों पर बनाए। मैंने इसके साथ एक पुस्तिका भी तैयार की है जिसमें उन पौधों के बारे में और उसके खत्म होते रहवासों की बातें लिखी हैं।

कुछ अपनी किताब *बिट्वीन अर्थ एण्ड स्काईः अवर इंटीमेट कनेक्शन्स टू ट्रीज़* (पृथ्वी और आकाश के बीचः

यह किताब पेड़ों और इंसानों के बीच के कई तरह के सम्बन्धों के बारे में है। ये सम्बन्ध केवल पर्यावरण से सम्बन्धित ही नहीं हैं। बल्कि पेड़ों से हमारे आर्थिक, आध्यात्मिक, सौन्दर्य सम्बन्धी रिश्तों पर भी इसमें बात की गई है। इसमें कविताएँ भी हैं, अन्य साहित्यिक सन्दर्भ भी हैं। भारत में पेड़ों की पूजा करने और उन्हें पवित्र मानने का पेड़ों पर क्या असर हुआ है इसका भी ज़िक्र किताब में किया गया है। मैं चाहती हूँ कि लोग गम्भीरता से सोचें कि हम पेड़ों पर कितनी तरहों से निर्भर हैं।

कई तरह से। मैं पत्रिकाओं में लिखती हूँ, टी.वी. की डॉक्यूमेंट्री फिल्मों में आती हूँ। कई जगहों पर लोगों के बीच जाकर इस विषय पर भाषण देती हूँ। लोगों को पेड़ पर चढ़ना सिखाती हूँ। अभी तक मैं बहुत अलग-अलग लोगों को पेड़ों की छत तक ले जा चुकी हूँ जिससे उनकी जानकारी बढ़ सके। इनमें राजनेता, कलाकार, संगीतकार सभी शामिल हैं क्योंकि पेड़ों से रिश्ता सभी का है। जैसा कि सब को मालूम होगा कि कई संगीत वाद्ययंत्र लकड़ी से बनते हैं। मेरा सभी मकसद यह है कि समाज के सभी वर्ग पेड़ों की छतरी से अपना जुड़ाव बना पाएँ।

भारत में क्रिकेट का बड़ा बोलबाला है। क्या आप इसे भी

यह ख्याल मुझे आया नहीं, पर विलो पेड़ से क्रिकेट को जोड़ने का आइडिया ज़बर्दस्त है। इससे पहले मैंने जंगल बचाने को कई खेलों से जोड़ने की कोशिश की है। जैसे- स्कीइंग, गोल्फ (गोल्फ की गेंद के बीच में एक दक्षिण अफ्रीकी पेड़ गटा परचा से निकले गोंद जैसे पदार्थ का उपयोग किया जाता है), बैडमिंटन का रैकेट, जिमनास्टिक का फर्श...।

हाँ, बिल्कुल। मेरे पति कीट विज्ञानी हैं और भूमध्यरेखा के आसपास पाई जाने वाली चींटियों का अध्ययन करते हैं। वे अपना काफी काम कोस्टारिका में ही करते हैं। मेरे दोनों बच्चे

साभार -हिन्दुस्तान टाइम्स, 17 नवम्बर, साक्षात्कारः प्रकाश चन्द्रा

इस महीने अमरीका का राष्ट्रपति पद सम्भालने वाले "बराक ओबामा" का नाम इस साल अँग्रेज़ी बोलने वालों में सबसे ज़्यादा इस्तेमाल होने वाला नाम रहा। शब्दों में "चेंज" का सबसे ज़्यादा प्रयोग हुआ। इसके अलावा "ग्लोबल वार्मिंग" व ओबामा द्वारा बोला गया "यस वी केन" जैसा वाक्यांश भी काफी चला। बीजिंग ऑलम्पिक ने भी कुछ नए शब्द जोड़े जैसे तैराक माइकल फेल्प्स के बीजिंग ऑलम्पिक में आठ स्वर्ण पदक जीतने को लेकर नया शब्द "फेल्पिसियन" गढ़ा गया। और हिन्दी और इंग्लिश के मिलेजुले शब्द को लेकर जैसे "हिंग्लिश" चला है वैसे ही बीजिंग ऑलम्पिक के पहले "चिंगलिश" शब्द भी खूब चला।

ग्लोबल लैंग्वेज मानीटर (जीएलएम) के पूरी दुनिया में अँग्रेज़ी भाषा को लेकर किए गए सालाना सर्वे में यह जानकारी सामने आई है। इसे अँग्रेज़ी बोलने वाले करीब 1.58 अरब लोगों से एकत्र किया गया है।

साभार - दैनिक भास्कर, 3 दिसम्बर

वर्षावन

वर्षा वन दुनिया के सबसे समृद्ध जंगल हैं। यहाँ जीवों तथा पेड़-पौधों की इतनी प्रजातियाँ हैं कि दिमाग चकरा जाता है – अचम्भित करने वाले आकारों, रंगों, साइज़ और आदतों वाले जीव। पृथ्वी के ज़मीनी हिस्से के केवल 7 प्रतिशत हिस्से में ये वन हैं मगर दुनिया भर में पाई जाने वाली प्रजातियों में से लगभग आधी यहाँ पाई जाती हैं। अनुमान है कि वर्षा वनों के पेड़ों की छत यानी कैनोपी पर लाखों कीट प्रजातियाँ रहती हैं।

वर्षा वनों की खासियत है – खूब धूप, बारिश, हवा और ऊँचा तापमान। इन वनों को मोटे तौर पर तीन परतों में बाँटा जा सकता है – कैनोपी, बीच की परत और ज़मीन।

कैनोपी को वर्षा वनों की छत कहना गलत न होगा। हवाई जहाज़ से देखो तो एक बड़ी-सी हरी छतरी नज़र आती है। जबकि हकीकत यह है कि ये पेड़ शायद ही आपस में छूते हैं। अक्सर इनके बीच कुछ दूरी होती है। शायद इसी दूरी की वजह से रोग और इल्लियां फैल नहीं पाते। इसीलिए कैनोपी में ही जीवन बसर करने वालों को एक से दूसरे पेड़ में कूदकर, उड़कर या किसी और तरह से जाने का गुर आना ज़रूरी है। कैनोपी की करोड़ों पत्तियाँ सूरज की रोशनी को प्रकाश संश्लेषण द्वारा ऊर्जा में बदलती हैं। इन्हें ऊर्जा की फैक्टरी कहना गलत न होगा। यही वजह है कि इन पेड़ों पर फल, बीज, फूल, पत्तियाँ इतने ज़्यादा होते हैं। इतने अलग-अलग जीवों का यहाँ आ बसने का एक प्रमुख कारण यही है। पेड़ भले ही ऊँचे हैं पर इनके तने काफी पतले होते हैं।

वर्षा वनों में कुछ पेड़ कैनोपी को भी लाँघ कर बहुत ऊपर तक उठ आते हैं – 20 से 100 फीट तक ऊपर। शायद ज़्यादा धूप, हवा की इच्छा उन्हें इतना ऊपर तक ले आती है। इसी चाह के कारण कई पौधे ज़मीन की बजाय पेड़ों के तनों, शाखों पर ही उगने लगते हैं। हाँ अपने मेज़बान पर ये सिर्फ सहारे के लिए निर्भर रहते हैं भोजन के लिए नहीं। इसके अलावा कई बेलें भी पेड़ों के सहारे धूप तक पहुँच जाती हैं।

कैनोपी से नीचे वाली परत में हवा, बारिश और धूप कैनोपी के मुकाबले कम होती है। लेकिन नमी और तापमान बहुत होता है। पक्षी और तितलियाँ यहाँ खूब होते हैं। ऊपर और नीचे की परतों में इनका आना-जाना लगा रहता है। घनी छतरी के कारण यहाँ अँधेरा-सा छाया रहता है।

वर्षा वनों की ज़मीन पर कीट, पेड़ों से गिरे अधखाए भोजन, बीजों, फफूँद आदि की भरमार होती है। कम रोशनी के कारण यहाँ झाड़ियाँ नहीं होतीं। पेड़ों और जीवों की इतनी विविधता के बावजूद यहाँ मिट्टी की बेहद पतली परत होती है। मिट्टी पुरानी है, अम्लीय है और इसमें बहुत कम उर्वरक पदार्थ हैं। वो तो भला हो गर्म और गीले माहौल में ज़मीन पर रहने वाली फफूँद और बैक्टीरिया का जो पेड़ों से लगातार गिर रहे जीवों के अवशेषों और दूसरी चीज़ों को बिना देर किए सड़ा देते हैं। ये पोषक तत्व पेड़ों की उथली जड़ें तुरन्त ग्रहण कर लेती हैं और पेड़ों तक पहुँचा देती हैं। यहाँ के पेड़ों की तन्दुरुस्ती का यही राज़ है।